परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीकी गुरुसे हुई भेंट एवं उनका गुरुसे सीखना

विषयसूची

१. डॉ. आठवलेजीके गुरु प.पू. भक्तराज महाराजजीका संक्षिप्त परिचय ६

२. सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीका संक्षिप्त परिचय ८

३. युगप्रवर्तक परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीके अलौकिक चरित्रसे युक्त विशेषतापूर्ण ग्रन्थमाला ! १२

४. सनातनके ग्रंथोंमें प्रयुक्त संस्कृतनिषशठ हिन्दीकी कारणमीमांसा १९

५. 'परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीकी साधनायात्रा' माला अर्थात 'आदर्श साधक' बननेका बोधामृत ! २०

६. प्रस्तुत ग्रन्थके लेखनमें द्विरुक्तिकी अनिवार्यताका कारण ! २५

७. ग्रन्थके कुछ सम्बोधन और उपाधि के सम्बन्धमें स्पष्टीकरण २६

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

(अध्यायके विशेषतापूर्ण शीर्षक नीचे दिए हैं ।)

अध्याय १. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीका साधना हेतु प्रवृत्त होना २९

१ अ. 'सम्मोहन उपचार-विशेषज्ञ' परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीका पहले ईश्वरका विचार न करनेवाला तथा बुद्धिवादी होना २९

१ आ. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको सम्मोहन उपचारोंकी सीमाएं ध्यानमें आना तथा उनका साधना हेतु प्रवृत्त होना ३०

अध्याय २. गुरुप्राप्तिके पूर्वसे ही परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके गुरुद्वारा सन्तोंके माध्यमसे अध्यात्म सिखाना और उनकी रक्षा करना ३३

अध्याय ३. डॉ. आठवलेजीद्वारा गुरुप्राप्ति पूर्व किया अध्यात्मप्रसार ३७

३ अ. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीद्वारा अध्यात्म सीखनेके लिए २५ से अधिक सन्तोंके पास जाना और साधना प्रारम्भ करना ३७

३ आ. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीद्वारा प्रारम्भमें किया अध्यात्मप्रसार ३७

अध्याय ४. प.पू. अण्णा करंदीकरजीने कराई डॉ. आठवलेजीकी उनके गुरुसे भेंट ! ४१

४ ऊ. डॉ. आठवलेजीको प.पू. भक्तराज महाराजजीसे गुरुमन्त्र मिलना ४६

अध्याय ५. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीका अपने गुरुसे सीखना ५१

५ आ. प.पू. भक्तराज महाराजजीका (प.पू. बाबाका) नामसाधनाके सम्बन्धमें सिखाना ५२

५ उ. डॉ. आठवलेजीका 'गुरु'के सन्दर्भमें सीखना ५५

५ ऊ. डॉ. आठवलेजीका 'गुरु-शिष्य'के सन्दर्भमें सीखना ५८

५ ए. डॉ. आठवलेजीका 'परेच्छा' व 'ईश्वरेच्छा'के संबंधमें सीखना ५९

५ औ. प.पू. बाबाद्वारा अहं-निर्मूलनके सम्बन्धमें सिखाना ६०

५ ग. प.पू. बाबाद्वारा 'भक्तोंका विचार कैसे करें ?', यह सिखाना ६५

५ घ. गुरुबन्धुओंकी आलोचना नहीं करना चाहिए ! ६६

५ झ. साक्षिभावके सम्बन्धमें सिखाना ६८

५ ट. अद्वैतकी ओर जाना सिखाना ६९

५ ड. अप्रत्यक्ष सिखाना ७०

अध्याय ६. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीद्वारा गुरुचरणोंमें तन-मन-धन अर्पित करना ७९

अध्याय ७. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके उनके गुरुपरिवारके सन्तोंके साथ भावआत्मीय सम्बन्ध ८६

अध्याय ८. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके प्रथम ग्रन्थ अध्यात्मशास्त्र'से अधिक चैतन्य प्रक्षेपित होता है, यह दर्शानेवाला वैज्ञानिक परीक्षण ९०

विषयसूची अन्तर्गत क्रमांक ५

‘परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीकी साधनायात्रा’ माला अर्थात ‘आदर्श साधक’ बननेका बोधामृत !

१. गुरुप्राप्तिके उपरान्त केवल ३ – ४ वर्षोंमें ही ‘गुरु’पदपर पहुंचनेवाले परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी !

‘साधारणतः गुरुप्राप्ति होनेके उपरान्त कुछ वर्ष गुरुके मार्गदर्शनमें कठोर साधना और सेवा करनेके पश्चात ही कोई शिष्य ‘गुरु’ पदका अधिकारी बन सकता है । परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी प्रारम्भमें ईश्वरका विचार नहीं करते थे; परन्तु अध्यात्मका महत्त्व ज्ञात होनेपर उन्होंने अध्यात्मशास्त्रका अध्ययन और साधना की । उनकी लगनके कारण उन्हें शीघ्र गुरुप्राप्ति हुई । इसके पश्चात अपने गुरुके मार्गदर्शनमें साधना कर वे केवल ३ – ४ वर्षोंमें ही गुरुपदतक पहुंच गए ! इससे उनमें उत्तम शिष्यके दर्शन होते हैं । ‘इतनी अल्प अवधिमें वे गुरुकृपाके पात्र कैसे बने ?’, इसकी जिज्ञासा कुछ लोगोंमें हो सकती है । उनकी इस जिज्ञासाका समाधान इस ग्रन्थमालासे होगा ।

२. साधकोंका भलीभांति आध्यात्मिक विकास होने हेतु साधनाके विविध पक्ष बारीकीसे सिखानेवाली ग्रन्थमाला !

सन्त ज्ञानेश्वर, सन्त तुकाराम महाराज, सन्त रामदासस्वामी आदि अनेक सन्तोंके चरित्र आज उपलब्ध हैं । उनमें उनका लौकिक जीवन, साधनामार्ग, सीख, लीलाएं, भक्तोंकी अनुभूतियां आदि पढनेको मिलती हैं । इन सन्तोंके आध्यात्मिक विकासमें ‘उनके मनकी विचारप्रक्रिया कैसी थी ? छोटी-छोटी घटनाओंसे भी उनके गुरुने उन्हें कैसे सिखाया ? साधकावस्थाके अगले चरणमें उनमें साधनाके दृष्टिकोणसे किस प्रकारके

परिवर्तन हुए ? उन्होंने चरण-प्रति-चरण तन-मन-धन का त्याग कैसे किया ? उनके गुरुने उन्हें समष्टि साधनाकी सीख कैसे दी ?' आदि अनेक पक्ष (पहलू) बारीकीसे लिखे हुए कहीं दिखाई नहीं देते । यह जानकारी साधकोंकी साधनामें शीघ्र उन्नतिके लिए लाभदायक सिद्ध होती है । परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी 'साधनायात्रा' ग्रन्थमालासे यह उद्देश्य निश्चित ही साध्य होगा ।

३. परात्पर गुरु डॉक्टरजीद्वारा लिखित साधनायात्राके निमित्त उनके कुछ गुणोंके हुए दर्शन !

३ अ. जिज्ञासा एवं शोधपरक वृत्ति : साधारणतः साधक अथवा शिष्य गुरुसे प्रश्न नहीं पूछते; केवल उनकी बातें मानते हैं । परात्पर गुरु डॉक्टरजी गुरुकी आज्ञाका पालन करनेके साथ ही अपनी जिज्ञासाके कारण अपने गुरुसे अध्यात्मसम्बन्धी अनेक प्रश्न पूछकर बहुत कुछ सीखते थे । उनकी शोधपरक वृत्तिके कारण भी वे अध्यात्मके अनेक तत्त्व सीख पाए । निश्चित ही इसका उपयोग वे समष्टिको अध्यात्मशास्त्र सिखाने के लिए भी कर पाए ।

३ आ. चिन्तनशील वृत्ति : परात्पर गुरु डॉक्टरजी जब साधकावस्थामें थे, तब बुद्धिसे प्रत्येक घटनाका विश्लेषणात्मक अध्ययन करते थे तथा उस समय वे स्वयंके मनका भी अध्ययन करते थे । इससे उन्हें साधनाके विविध पक्ष समझमें आते थे । इसका एक उदाहरण इस प्रकार है । परात्पर गुरु डॉक्टरजीको गुरुप्राप्तिसे पहले ही विविध सन्तोंने अध्यात्म सिखाया और अनिष्ट शक्तियोंके कष्टसे उनकी रक्षा भी की । इस सम्बन्धमें परात्पर गुरु डॉक्टरजी कहते हैं, 'सन्तोंका मुझे अध्यात्म सिखाना और संकटोंसे मेरी रक्षा करना आदि सब मेरे गुरुने ही किया था, यह अनेक वर्षों पश्चात एक बार उनके द्वारा सहज कहे वाक्यसे ज्ञात हुआ ''आपके गुरु महान हैं, इसलिए आप यह सब सीख पाए और (अनिष्ट शक्तियोंसे) बचे !''

परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी ऐसी चिन्तनशील वृत्तिके अनेक उदाहरण इस ग्रन्थमालामें दिए हैं । इससे साधकोंको 'साधनाका चिन्तन कैसे करना चाहिए ?', इसका उत्तम बोध मिलेगा ।

३ इ. निर्मलता : परात्पर गुरु डॉक्टरजीने उन्हें गुरुसे सीखनेके लिए मिले सूत्र लिखते समय स्वयंकी छविको किसी प्रकारसे बचाया नहीं है, उदा. गुरु कभी-कभी उन्हें अकारण डांटते थे, यह भी उन्होंने निर्मलता से लिखा है ।

३ ई. सूत्र तत्परतासे लिखना : वर्ष २०११ में एक बार मैं परात्पर गुरु डॉक्टरजीके कक्षमें सेवासे सम्बन्धित शंका पूछनेके लिए गया था । उस समय वे स्नान करनेके लिए जा रहे थे तथा कागद-लेखनी (पेन) साथ लेकर जा रहे थे । यह देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है, यह उन्हें ज्ञात होनेपर उन्होंने कहा ''स्नान करते समय कुछ सूझा, तो तुरन्त लिख लेता हूं; अन्यथा भूल जाता हूं ।'' परात्पर गुरु डॉक्टरजीमें 'सूत्र तत्परतासे लिखने'का गुण मूलतः होनेके कारण साधना आरम्भ करनेसे लेकर आजतक उन्हें साधनायात्राके विविध चरणोंपर सीखनेके लिए मिले सूत्र, ईश्वर द्वारा सुझाया गया विविध विषयोंका ज्ञान आदि वे तुरन्त लिख लेते हैं । इसलिए समष्टिको अध्यात्मसे सम्बन्धित नवीनतापूर्ण ज्ञान उपलब्ध हो रहा है ।

४. 'साधनायात्रा' ग्रन्थमालाकी कुछ विशेषताएं !

४ अ. अध्यात्मशास्त्र विषद करनेवाला चरित्र : साधारणतः चरित्र इतिहास अथवा कथा के स्वरूपमें लिखा जाता है । परात्पर गुरु डॉक्टरजी उनके गुरुकी ओर 'तत्त्व'के रूपमें देखते थे । इसलिए परात्पर गुरु डॉक्टरजीने गुरुके मार्गदर्शनमें हुई स्वयंकी साधनायात्रा 'शास्त्र'के रूपमें लिखी है ।

४ आ. विषय ठीकसे समझनेके लिए कालक्रमकी अपेक्षा विषयोंके अनुसार चरित्रका प्रस्तुतीकरण : साधारणतः चरित्र कालानुसार लिखनेका प्रचलन है । परात्पर गुरु डॉक्टरजीका स्वयंकी साधनायात्रा लिखनेका मुख्य उद्देश्य है, 'साधक साधनाके विविध अंग सुयोग्य पद्धतिसे और अचूक सीख पाएं ।' इसलिए उन्होंने अपने जीवन की घटनाएं, समय-समयपर सीखनेके लिए मिले सूत्र आदि सटीक कालक्रमानुसार न लिखकर, अधिकतर सम्बन्धित विषयके अनुसार लिखे हैं ।

५. साधकोंके अन्तःकरणमें साधनाकी सीख गहराईतक अंकित करनेवाली ग्रन्थमाला !

परात्पर गुरु डॉक्टरजी अपने गुरुसे जो सीखते थे, उसका स्वयं आचरण करते ही थे; परन्तु साधकोंसे भी वैसा आचरण करवा लेते थे । इसका एक उदाहरण इस प्रकार है । एक बार परात्पर गुरु डॉक्टरजी गुरुके आश्रममें गए, तब गुरुने उनसे कहा, ''आश्रमकी साफसफाई करो ।'' ऐसा करनेपर परात्पर गुरु डॉक्टरजीके मनमें पहली बार आश्रमके प्रति अपनत्वकी भावना उत्पन्न हुई । उसके उपरान्त आगे प्रत्येक बार परात्पर गुरु डॉक्टरजी जब भी गुरुके आश्रममें अथवा गुरुपूर्णिमा आदि उत्सवोंके अवसरपर जाते थे, तब वहांकी स्वच्छता, वस्तुएं ठीकसे जमाना आदि अवश्य करते थे । कुछ समय उपरान्त परात्पर गुरु डॉक्टरजीने सनातनके आश्रम स्थापित किए । वहां साधकोंमें भी उन्होंने इस गुणके बीज बोए हैं ।

सन्त अथवा गुरु से जो सीखनेके लिए मिलता है, उसका जो भलीभांति आचरण करता है, वही खरा सत्‌शिष्य होता है ! परात्पर गुरु डॉक्टरजी सत्‌शिष्य हैं, इसी कारण वे अल्पावधिमें गुरुकृपाके पात्र बने तथा आगे 'परात्पर गुरु'की उच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त कर पाए । ऐसी महान विभूतिकी वाणी और लेखन में स्वाभाविक ही चैतन्य आता है । परात्पर

गुरु डॉक्टरजीकी 'साधनायात्रा' यह माला भी चैतन्यदायी है । इसलिए वह साधनाकी सीख साधकोंके अन्तःकरणकी गहराईमें अंकित करती है ।

६. श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना !

'परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी साधनायात्रा' ग्रन्थमालाके अध्ययनसे सर्व जिज्ञासुओं और साधकों को साधना करनेकी स्फूर्ति मिले तथा वे गुरुके मार्गदर्शनमें साधना कर ईश्वरप्राप्ति कर पाएं', ऐसी श्री गुरुके चरणोंमें भावपूर्ण प्रार्थना है ।'

– (पू.) श्री. संदीप आळशी, सनातनके ग्रन्थोंके संकलनकर्ता
(१७.६.२०२२)

अखिल मानवजातिका उद्धार करनेवाली सनातनकी ग्रन्थसम्पदा !

- 'अध्यात्म एकमात्र चिरन्तन शास्त्र है', यह सिद्धान्त आजके विज्ञानयुगमें भी दृढता तथा स्पष्टता से बतानेवाला लेखन !
- अध्यात्मशास्त्रके अध्ययनसे प्रत्येक व्यक्तिकी ऐहिक तथा पारमार्थिक प्रगति साध्य हो एवं अखिल विश्वमें सुख, शान्ति एवं सन्तोष होने हेतु मार्गदर्शन !
- ग्रन्थोंमें दिए सत्त्वगुणी विचारोंके कारण वायुमण्डलमें ब्राह्मतेज एवं क्षात्रतेज से युक्त विचारोंका प्रक्षेपण !
- ईश्वरीय तत्त्वरूपी शब्दप्रमाणके अनुसार ही प्रत्येक ग्रन्थ लिखा गया है, इसलिए एक प्रकारसे ईश्वरकी साक्षीमें ग्रन्थोंकी निर्मिति !
- ज्ञानमें विद्यमान ईश्वरी चैतन्य, आनंद व शांति की अनुभूति देनेवाला साहित्य !

– श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ